दक्षिण एशिया में इस्लामी विरासत के पुनरुद्धार की आवश्यकता

भारत में 7 लाख मस्जिदें हैं, जो दुनिया के किसी भी इस्लामी देश से अधिक हैं। दुनिया की दूसरी सबसे पुरानी मस्जिद भारत में है। इसके अलावा, कई इस्लामी स्मारक हैं जो वास्तुकला के मामले में अद्वितीय हैं।

दक्षिण एशिया में शिया इस्लाम की धार्मिक संस्कृति और भाषा साहित्य की अमूर्त क्षमताएँ, विशेष रूप से भारत के संदर्भ में।

लक्ष्मण सिंह, पीएचडी
laxman1378@gmail.com

मैं इस पेपर को इस संदर्भ में प्रस्तुत करने जा रहा हूँ कि धर्म, विशेष रूप से शिया इस्लाम और ईरान ने भारत को संस्कृति और भाषाओं के मामले में कैसे प्रभावित किया है। हम वैश्वीकरण के युग में जी रहे हैं, जहाँ हर कोई एक वैश्विक गाँव में रहने जैसा महसूस करता है। फिर भी, युगों से कई संस्कृतियाँ एक-दूसरे को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करती रही हैं। शिया इस्लाम का उदाहरण लें, भारत में "हिंदी" और "हिंदू" दोनों शब्द पुरानी फारसी भाषा पहलवी से आए हैं। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश भारत एक फारसी पहचान रखता है, जो है "हिंदुस्तान" या हिंदुओं की भूमि। हिंदू धर्म अब दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है, ईसाइयत और इस्लाम के बाद। विश्व की 13% आबादी हिंदू धर्म या उसकी संस्कृति का पालन करती है। हालांकि, हिंदू धर्म की विशेषता अन्य धर्मों की तरह नहीं है; यह अधिकतर संस्कृति के बारे में है। भारतीयों को "हिंदू" नाम पुराने फारसियों ने दिया था।

7वीं शताब्दी के बाद इस्लाम भारत में फैलना शुरू हुआ। हजरत अली के समग्र विचारों से आकर्षित होकर कई हिंदू, विशेष रूप से सिंध के जाट, इस्लाम की ओर आकर्षित हुए। हिंदी भाषा, जो एक फारसी शब्द है, के अलावा, एक अन्य व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा पंजाबी भी एक फारसी नाम रखती है, जिसका शाब्दिक अर्थ है पंजाब की भाषा, यानी "पानी-आब" (पाँच नदियों की भूमि)। पंजाबी पाकिस्तान में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है; 38% पाकिस्तानी पंजाबी बोलते हैं, जबकि केवल 7% पाकिस्तानी राष्ट्रीय भाषा उर्दू बोलते हैं। उर्दू एक तुर्की शब्द है। इस प्रकार, दक्षिण एशिया की लगभग आधी आबादी की एक फारसी पहचान है और ऐसी भाषाएँ बोलती है जिनकी जड़ें फारसी हैं।

भारत और पाकिस्तान दोनों में एक बहुत बड़ा राज्य है जिसका नाम पंजाब है, जिसका अर्थ है पाँच नदियों की भूमि। रेहबर आयतोल्लाह खामनेई ने एकता के बारे में जो सुझाव दिया है, वह बहुत महत्वपूर्ण है। अपनी प्रसिद्ध भाषण "पश्चिमी दुनिया के युवाओं के नाम" में उन्होंने मूल्यों की खोज करने को कहा है—ऐसे मूल्य जो सामान्य हों, जो मानवता को एकजुट करें, जो पूरी सभ्यता का आधार हों। ये मूल्य हैं—अन्याय के खिलाफ लड़ाई और पूरी

मानवता के लिए प्रेम, जो हजरत अली का मूल संदेश है और बाद में इमाम खुमैनी और इमाम खामनेई द्वारा प्रचारित किया गया।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत, बांग्लादेश और पाकिस्तान जैसे दक्षिण एशियाई देशों में 65 करोड़ से अधिक मुसलमान हैं, जो पूरी उमmah का लगभग एक तिहाई हिस्सा है। नई विश्व व्यवस्था, जो मानवता को धमकी दे रही है, रक्तपिपासु पूँजीवादी विचारधारा पर आधारित है और शांतिपूर्ण राष्ट्रों में अशांति पैदा कर रही है। रसूल अल्लाह का एक कथन है कि मस्जिदें सबसे शांतिपूर्ण स्थान हैं, और बाजार वे स्थान हैं जो मानव मन को सबसे अधिक अशांत करते हैं। यह संदेश, जो रसूल अल्लाह ने 1400 साल पहले दिया था, बहुत स्पष्ट है। पूँजीवाद झूठी जरूरतें पैदा कर रहा है और समाज को कई तरीकों से विभाजित कर रहा है। केवल शुद्ध आत्माओं द्वारा नेतृत्व वाली विचारधारा हमें इस नए बाजार तंत्र के दुष्प्रभावों से बचा सकती है, और यह नेतृत्व निश्चित रूप से ईरान का है।

इसलिए, धार्मिक विचारों से बुनी गई वैचारिक नींव, जो संस्कृति के रूप में फैलती हैं, हमें इस भ्रामक दुनिया में रास्ता दिखा सकती हैं। हमें इन सांस्कृतिक विशेषताओं को और मजबूत करने की आवश्यकता है। एक समय था जब दुनिया के शीर्ष वैज्ञानिक और विद्वान मुसलमान थे, और उनमें से अधिकांश ईरानी थे। भाषा, धर्म और विरासत आपस में जुड़े हुए सांस्कृतिक लक्षण हैं। ईरानी मूर्तिकार ने भारत का वर्तमान राष्ट्रीय प्रतीक, अशोक स्तंभ, बनाया। ईरानी वास्तुकार, जैसे उस्ताद ईसा, ने ताजमहल का डिज़ाइन बनाया, जो दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक है।

फारसी कविता ने दक्षिण एशिया में इस्लाम का मार्ग प्रशस्त किया और लोगों ने एक नए धर्म, इस्लाम, के बारे में जाना, जो वास्तव में भाईचारे, समानता और एकता की वकालत करता था। भाषा संस्कृति का वाहन है, जो उस भाषा को बोलने वालों से जुड़ी विशिष्ट संस्कृति को वहन करती है। किसी विदेशी भूमि में भाषा का सामान्यीकरण बहुत समय लेता है, जैसा कि हम भारत में अंग्रेजी के मामले में देखते हैं। यह अब एक भारतीय भाषा बन चुकी है। मुगल बादशाहों द्वारा प्रोत्साहित फारसी कविता को बाद में भारत के स्वदेशी हिंदू राजाओं ने भी बढ़ावा दिया। भारत के एक महान राजा, शिवाजी, जो मुगलों के खिलाफ खड़े हुए, को बहुत अच्छी फारसी आती थी। उस क्षेत्र की भाषा, मराठी, में कई फारसी शब्द हैं।

यहाँ तक कि भारत के वर्तमान गृह मंत्री और दूसरे सबसे शक्तिशाली व्यक्ति, अमित शाह, का पारिवारिक नाम फारसी है, और वे हिंदू हैं। भारत के वर्तमान मंत्रिमंडल में एक मंत्री, स्मृति ईरानी, का नाम भी भाषा और संस्कृति के विस्तार का प्रतीक है। नवरोज का उदाहरण भी उल्लेखनीय है। यह एक त्योहार है जो कई मध्य पूर्वी और मध्य एशियाई देशों में मनाया जाता है, जो फिर से ईरानी संस्कृति का विस्तार है।

अब हम अगले बिंदु पर आते हैं, जो है संबंधित देशों में इस्लामी विरासत को पुनर्जनन। मैंने भारत में फारसी प्रभाव के बारे में बहुत अध्ययन किया है, और यह स्पष्ट है कि जागरूकता की कमी है। हालांकि भारतीय विद्वान ईरानी इस्लामी प्रभाव के बारे में जानते हैं, लेकिन उन्हें विरासत के सूक्ष्म विवरणों की जानकारी नहीं है, या वे इसे लोकप्रिय नहीं करना चाहते। मैं इस बारे में पूरी तरह निश्चित नहीं हूँ।

मैं एक शास्त्रीय उदाहरण देना चाहता हूँ—मुगल सम्राट हुमायूँ का। हुमायूँ को अफगान योद्धा शेरशाह ने एक निर्णायक युद्ध में हराया था। हुमायूँ को सफाविद राजा शाह तहमास्प ने शरण दी। हुमायूँ 8 साल तक ईरान में रहे। उन्होंने शाह तहमास्प को कई उपहार दिए, जैसे तोते, जिनके वंशज आज भी क़ज़वीन में रहते हैं। उन्होंने हाथी भी भेंट किए, लेकिन वे मर गए। हुमायूँ की पत्नी, बेगा बेगम, जो खुरासान की शिया मुस्लिम थीं, ने हुमायूँ के मकबरे का निर्माण करवाया। मकबरे के चारों ओर का बगीचा चारबाग-ए-बहिश्त पर आधारित था। इस मकबरे का मुख्य वास्तुकार इस्फहान से था, जिसका नाम गियासुद्दीन था। इस मकबरे की सबसे रोचक बात यह है कि इसमें 72 दरवाजे हैं, जो करबला के 72 शहीदों को दर्शाते हैं। मैंने इस मकबरे के बारे में 45 मिनट का एक वृत्तचित्र देखा, जिसमें इस तथ्य का उल्लेख नहीं था कि 72 दरवाजों का कारण क्या है। ऐसे विषयों पर बहुत शोध करने और इसे प्रचारित करने की आवश्यकता है।

मेरे जिले, मुजफ्फरनगर, का उदाहरण लें, जिसे 16वीं शताब्दी के अंत में एक ईरानी ने स्थापित किया था। वह खुरासान का शिया था और एक सैन्य साहसी था। वह मुगल सम्राट जहांगीर का सिपहसालार बना। उसके वंशज आज भी मेरे शहर में रहते हैं। ग्रामीण उत्तर भारत में फारसी नामों वाले स्थान असामान्य नहीं हैं। मेरे जिले में कई गाँव हैं, जैसे सैयद नंगला (सैयद का गाँव) और सैदपुर (सैयद का किला)। इसके अलावा, भारत में तीन महत्वपूर्ण शहर हैं जिनमें शिया इस्लाम के कई चिह्न हैं—लखनऊ, भोपाल और हैदराबाद। लखनऊ इनमें सबसे महत्वपूर्ण है, जहाँ इस्फहान के बाद सबसे अधिक शिया वास्तुकला वाले स्मारक हैं। लखनऊ में दुनिया की सबसे बड़ी हुसैनिया है, जिसे इमामबाड़ा कहा जाता है, यानी इमाम का स्थान। लखनऊ की शाही परिवार निशापुर से था। इस शाही परिवार के अंतिम राजा के संरक्षण के कारण भारतीय शास्त्रीय नृत्य कथक में कई फारसी तत्व शामिल हुए।

नृत्य, भाषा और वास्तुकला के अलावा, यदि हम भोजन की बात करें, तो ईरानियों ने भारत में कई व्यंजन लाए, जैसे सोहन हलवा, बिरयानी, समोसा, जलेबी और कबाब। भारत में एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत मौजूद है। हिंदुओं की एक उच्च जाति, कायस्थ, फारसी में इतनी निपुण थी कि उन्हें "आधा मुसलमान" कहा जाता था। वे खुद को मुंशी और लाला जैसे फारसी शब्दों से पुकारते थे।

भारत में कुछ ईरानी लोर बसे हैं, जो लगभग 200 साल पहले घोड़ा व्यापारी के रूप में भारत आए थे। अब वे थोड़ा-बहुत फारसी बोलते हैं। एक उदाहरण है कि लगभग 20 साल पहले वे भोपाल शहर में बसे और वहाँ उन्होंने अशूरा शुरू किया, क्योंकि उनकी ईरानी दृढ़ता थी। स्थानीय भारतीय शिया ऐसे आयोजन करने से डरते थे। उन्हें वहाबियों के कारण बहुत हिंसा का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने इसे जारी रखा और सफल हुए।

हिंदी में एक कहावत है, "हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े-लिखे को फारसी क्या।" इसका अर्थ है कि भारत में अगर कोई व्यक्ति विद्वान है, तो उसे फारसी में निपुण होना चाहिए। मुगल काल में फारसी भारत की दरबारी भाषा बन गई थी। 1832 तक फारसी दरबारी भाषा रही। मुगल दरबार में मौजूद फारसी आप्रवासी अधिकारियों ने इसे दरबारी भाषा बनाने में सफलता प्राप्त की। मुगल काल में कई हिंदू धार्मिक ग्रंथों का फारसी अनुवाद किया गया, लेकिन फारसी ग्रंथों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद बहुत कम हुआ। यहाँ तक कि नहजुल बलाग़ा भी हिंदी में उपलब्ध नहीं है। भारत में नहजुल बलाग़ा देवनागरी लिपि में है, लेकिन भाषा उर्दू है, जो बहुसंख्यक हिंदुओं की भाषा नहीं है। हिंदू धार्मिक ग्रंथों के फारसी अनुवाद अधिक उपलब्ध हैं, लेकिन पहली हिंदी कुरान केवल 13 साल पहले प्रकाशित हुई थी। इससे पहले केवल उर्दू भाषा का देवनागरी संस्करण उपलब्ध था, जिसे हिंदी कहा जाता था।

धार्मिक ग्रंथों का हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने और इंटरनेट के माध्यम से विचारों को प्रचारित करने की सख्त आवश्यकता है। यह दूसरों की गलती नहीं है कि वे आपके मार्ग का पालन नहीं करते; पहले यह आपका कर्तव्य है कि आप उन्हें उनकी भाषा में अपने विचार बताएँ। भाषा मानव संचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है; जो भी हमारी भाषा में बोलता है, हम उससे जुड़ाव महसूस करते हैं। समाज भाषाविज्ञानियों ने इस विषय पर कई शोध किए हैं।

भारत में फारसी और पांडुलिपियों के लिए दो प्रसिद्ध पुस्तकालय हैं—एक रामपुर में, जो एक पश्तून अफगान साम्राज्य था, और दूसरा पटना का खुदाबख्श ओरिएंटल लाइब्रेरी। भारत में तीन दर्जन से अधिक विश्वविद्यालय हैं जो फारसी साहित्य में पीएचडी कार्यक्रम प्रदान करते हैं। भारत में सैकड़ों फारसी विद्वान हैं, लेकिन ईरान में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो हिंदी भाषा जानता हो, और न ही कोई विश्वविद्यालय या स्कूल हिंदी में कोर्स प्रदान करता है। यदि आप भाषा नहीं जानते, तो आप लोगों को नहीं जानते। हिंदी दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। साथ ही, सांस्कृतिक अंतर इतना बड़ा है कि भारत में एक भी भारतीय मुस्लिम मौलाना नहीं है जो हिंदी में उपदेश दे सके। मैंने अपने पूरे जीवन में ऐसा कोई मौलाना नहीं देखा। इसलिए, भाषा और संस्कृति का एक बड़ा अंतर है जिसे भरने की आवश्यकता है।

अवध क्षेत्र की इस्लामी वास्तुकला

16वीं शताब्दी के अंत में खुरासान प्रांत से एक सैन्य साहसी भारत आया और मुगल सेना का जनरल बना। बाद में उसने उत्तर भारत में अवध साम्राज्य की स्थापना की, जो बाद के मुगल काल में उत्तर भारत का सबसे महत्वपूर्ण साम्राज्य था। अवध के राजा, नवाब असफुद्दौला, ने दुनिया की सबसे बड़ी हुसैनिया का निर्माण करवाया, जिसे बड़ा इमामबाड़ा कहा जाता है। दक्षिण एशियाई देशों जैसे भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में हुसैनिया को इमामबाड़ा कहा जाता है।

अंतरधार्मिक संवाद और सांस्कृतिक मेलजोल

वैश्विक दुनिया में, जहाँ लगभग हर कोई मोबाइल फोन से जुड़ा है और एक वैश्विक गाँव का हिस्सा है, अंतरधार्मिक संवाद की तीव्र आवश्यकता है। आज विश्व की 32% आबादी ईसाई, 23% मुस्लिम, 15% हिंदू और लगभग 7% बौद्ध हैं। 15% विश्व आबादी किसी भी धर्म से संबद्ध नहीं है। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया, एक प्रमुख धर्म, हिंदू धर्म, अपने नाम में एक फारसी पहचान रखता है। "हिंदू" शब्द पुरानी फारसी पहलवी भाषा से आया है।

भारत में एक उच्च हिंदू जाति, कायस्थ, फारसी भाषा में इतनी निपुण थी और इस्लामी संस्कृति को इतना अपनाया कि उन्हें भारत में "आधा मुसलमान" कहा जाता था। लोग उन्हें लाला कहते थे, जो एक फारसी शब्द है। एक अन्य शब्द जो विद्वान कायस्थ अपने लिए इस्तेमाल करते थे, वह था "मुंशी," जो भी एक फारसी शब्द है। भारत में पहला फारसी समाचार पत्र एक प्रमुख कायस्थ समाज सुधारक ने स्थापित किया था। वे भारत में बहुत प्रसिद्ध हैं, और हर शिक्षित भारतीय उन्हें उनके नाम, राजा राम मोहन राय, से जानता है। 1826 ई. में उन्होंने भारत में "रास्त गोफ्तार" समाचार पत्र स्थापित किया। इस हिंदू कायस्थ समुदाय ने भारत में फारसी भाषा और इस्लामिक संस्कृति में बहुत योगदान दिया। आज भी भारत के सर्वश्रेष्ठ फारसी प्रोफेसर, प्रोफेसर चंद्रशेखर, कायस्थ समुदाय से हैं।

अंतर-धार्मिक मेलजोल

सोशल मीडिया के युग में हम इस शक्तिशाली उपकरण को नजरअंदाज नहीं कर सकते। जानकारी के अभाव में लोग वही मानते हैं जो उन्हें बताया जाता है। यदि हम वास्तव में सत्य को प्रस्तुत करें और उसके पीछे का कारण बताएँ, तो अधिकांश लोग निश्चित रूप से सहमत होंगे। कार्य केवल इतना है कि उन्हें सही संदेश उनकी भाषा में देना होगा। मैंने विभिन्न सोशल मीडिया मंचों पर शोध किया और यह रोचक पाया कि जब कई अहले हदीस, वहाबी और अन्य लोगों को बाग़-ए-फ़दक की घटना और हजरत फातिमा के साथ हुए अन्याय के बारे में पता चला, तो उनके विचार बदल गए। 1991 में जब सद्दाम हुसैन ने कुवैत पर हमला किया और 32 देशों की सेनाएँ, जिसमें अमेरिका भी शामिल था, उसका सामना करने

आईं, तो दक्षिण एशिया, विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान में मुसलमानों ने सद्दाम हुसैन को नायक माना और उस समय जन्मे लाखों बच्चों का नाम सद्दाम हुसैन रखा गया।